

24 मई, 2021 को भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर में "शुष्क भूमि कृषि में एकीकृत कृषि प्रणाली" पर वेबिनार

एकीकृत कृषि प्रणाली, कृषि प्रणाली अनुसंधान का एक ऐसा घटक है जो फसल पैटर्न में अधिकतम उत्पादन के लिए कृषि तकनीकों में बदलाव को उपयोग में लाता है और संसाधनों के इष्टतम उपयोग का ध्यान रखता है। एकीकृत कृषि प्रणाली में जैव-भौतिक और सामाजिक-आर्थिक कैप्सूल के रूप में आय की अस्थिरता, खाद्य और पोषण संबंधी असुरक्षा, बेरोजगारी, भेद्यता और किसानों के साथ-साथ भूमिहीन मजदूरों की गरीबी को दूर करने अपार क्षमता है. इसका लक्ष्य सभी घटक उद्यमों की उपज को अधिकतम करना है ताकि सिस्टम की उत्पादकता को स्थिरता प्रदान की सके एवं कृषि-पारिस्थितिक संतुलन प्राप्त किया जा सके। यह बात प्रतिष्ठित विशेषज्ञ ने इंदौर शहर स्थित भाकृअनुप-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित एक ऑनलाइन वेबिनार के माध्यम से आज दिनांक 24.05.2021 को व्यक्त की।

खरीफ सीजन की शुरुआत से पहले संस्थान द्वारा आयोजित वेबिनरों की श्रृंखला में, इंदौर स्थित भाकृअनुप-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान ने "शुष्क भूमि कृषि में एकीकृत कृषि प्रणाली" पर आज एक वेबिनार का आयोजन किया जिसमे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के किसानों, वैज्ञानिकों और सूचना के प्रसार में शामिल सम्बंधित राज्यों के कृषि विभाग से सम्बद्ध विस्तारकर्मियों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य स्वयंसेवी संस्थानों से प्रतिनिधियों के रूप में जुड़े 76 श्रोताओं को संबोधित करते हुए इस वेबिनार के अतिथि वक्ता एवं इंदौर कृषि महाविद्यालय के प्रख्यात विशेषज्ञ डॉ. एस. के. चौधरी ने इस पर एक व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अपने संबोधन में, संस्थान की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने शुष्क भूमि कृषि में एकीकृत कृषि प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डाला और कृषक समुदाय को विभिन्न कृषि मुद्दों पर आवश्यकता-आधारित जानकारी को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के कर्मचारियों के चल रहे प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। वेबिनार का उद्देश्य किसानों को फसल उत्पादकता को बनाए रखने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए वर्षा सिंचित/शुष्क भूमि परिस्थितियों में एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था। इससे पहले डॉ. एस.डी. बिल्लोरे, अध्यक्ष, फसल उत्पादन विभाग, भाकृअनुप-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर द्वारा संक्षिप्त स्वागत भाषण और विषयवस्तु का परिचय किया गया।

वेबिनार के दौरान अपनी प्रस्तुति में, डॉ एस के चौधरी, मुख्य वैज्ञानिक, कृषि महाविद्यालय, इंदौर ने एकीकृत कृषि प्रणाली के उद्देश्यों, भूमिका, कार्यक्षेत्र, उद्देश्य और सिद्धांतों को रेखांकित किया। एकीकृत कृषि प्रणाली का

उद्देश्य उत्पादकता, लाभप्रदता, स्थिरता, संतुलित भोजन, स्वच्छ वातावरण, संसाधनों का पुनर्चक्रण, वर्ष भर आय में वृद्धि करना है। एक एकीकृत फसल खेती प्रणाली पशुधन उत्पादन को बढ़ाने, गहन खेती के प्रभावों को कम करने और संसाधनों के कुशल उपयोग के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण समाधान का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने कृषि, रेशम उत्पादन, मछली पालन, अजोला खेती, बागवानी, डेयरी, बतख पालन, रसोई बागवानी, वानिकी, मुर्गी पालन, कबूतर पालन, चारा उत्पादन, मशरूम की खेती, बकरी और भेड़, वर्मिकल्चर, सुअर पालन, नर्सरी और बीज उत्पादन जैसे एकीकृत कृषि प्रणाली के घटकों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर एक वैज्ञानिक चर्चासत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें श्रोताओं की विभिन्न शंकाओं का निराकरण किया गया। कार्यक्रम का समापन आयोजन सचिव डॉ. राकेश कुमार वर्मा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।